बनारस घराने के प्रख्यात तबला वादक पं0 अनोखे लाल मिश्र एवं पं0 सामता प्रसाद मिश्र 'गुदई महाराज' की वादन शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा से संगीत में पी–एच० डी०

उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की

रूपरेखा

2018

निर्देशक

डॉ0 शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

संगीत विभाग

शोध–छात्रा

मोनिका सिंह

संगीत विभागाध्यक्षा

प्रो0 सुभद्रा कुमारी सतसंगी

संकाय प्रमुख

प्रो0 जे. के. वर्मा

कला संकाय, संगीत विभाग

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा

बनारस घराने के प्रख्यात तबला वादकपं0 अनोखे लाल मिश्र एवं पं0 सामता प्रसाद मिश्र 'गुदई महाराज' की वादन शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन

भूमिका

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में संगीत को अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। भारत में संगीत को सदैव एक पवित्र कला के रूप में माना जाता है। संगीत वह कला है, जिसे सभी ललित कलाओं में सर्वोत्तम स्थान प्राप्त है।

''गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्चयते।''

अर्थात्– गायन, वादन तथा नृत्य तीनों का त्रिवेणी संगम ही सगीत है। संगीत में ताल का विशेष व महत्वपूर्ण स्थान है। विद्वानों ने कहा है कि अनिबद्ध या तालविहोन संगीत आरण्यक संगीत है तथा निबद्ध या तालयुक्त संगीत सामाजिक संगीत है। संगीत में लय को प्रदर्शित करने का माध्यम 'ताल' है भारतीय संगीत ताल प्रधान संगीत है। ताल के द्वारा ही संगीत म विभिन्न सौन्दर्यपूर्ण चलन व शैलियों का विकास होता है। जहाँ एक ओर ताल संगोत को लयात्मक आधार प्रदान करती है, वह दूसरी ओर श्रोताओं के मन को आल्हादित कर उन्हें आनन्द प्रदान करती है।

संगीतरत्नाकर में वर्णित है–

''मुख प्रधान देहास्य नासिका मुख मध्यके।
तालहीनं तथा गीतं नासाहीनं मुखं यथा।।''

ताल ही संगीत को एक निश्चित नियम व समय के बंधन में बाधती है। ताल का मुख्य कार्य किसी भी रचना में क्रमबद्धता लाना है। '**संगीतरत्नाकर**' में वर्णित है कि जिस प्रकार शरीर का प्रधान मुख है और मुख में नासिका प्रधान है, उसी प्रकार संगीत बिना ताल के नासिकाविहीन मुख के समान होता है।

''तालस्तल प्रतिष्ठयामिति धायोर्धजि स्मृतः।
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठितम।।''

ताल का धातु रूप तल है। गीत, वाद्य और नृत्य तीनों की प्रतिष्ठा ताल पर हुई है। सम्भवतः इसीलिए प्रतिष्ठावाचक धातुरूप 'तल' से 'ताल' बना हो सकता है।

ताल का प्रयोग से ही संगीत में अनुशासन परिलक्षित होता है। जिस प्रकार सृष्टि की प्रत्येक वस्तु में प्राण तत्व के रूप में लय विद्यमान है उसी प्रकार संगीत में प्राण के रूप में लय और ताल विद्यमान है। ताल का प्रदर्शन घन व अवनद्ध वाद्य के माध्यम से किया जाता है। भारतीय संगीत में अवनद्ध वाद्यों की श्रेणी के अन्तर्गत तबला वाद्य का स्थान सर्वोपरि है। संगीत के क्षेत्र में तबले का 'स्वतन्त्र वादन' और 'संगत' दोनों ही रूप में प्रयोग होता है। तबला शास्त्रीय संगीत व उपशास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त वर्तमान में सुगम संगीत, लोकसंगीत, फिल्मी संगोत की संगति हेत, तबला वाद्य का अत्याधिक उपयोग किया जाता है। संगीत में प्राचीन काल से ही गुरू–शिष्य परम्परा का प्रचार रहा है। भारतीय शिक्षा पद्धति में 'गुरू' का स्थान सर्वोपरि माना गया है यथा–

''गुरूब्रहा, गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूसाक्षात् परब्रह्य तस्मै श्री गुरूवे नमः।।''

गुरू ब्रह्मा अर्थात् सर्जक, विष्णु अर्थात् पालक एव शिव अर्थात् दुर्गुणों के सहायक हैं, एसे गरू जो साक्षात् परब्रह्य स्वरूप है उन्हें नमन है। अतः गुरू का स्थान देवताओं के समतुल्य और कहीं–कहीं पर उनसे भी ऊपर माना गया है।

''गुरू गोविन्द दोउ खडे, काके लागौं पाय।,
बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताय।।''

सत कबीरदास ने कहा है कि गुरू और ईश्वर दोनों खडे है लेकिन गुरू ही महान है, क्योंकि उनसे ही हमें ईश्वर के विषय में ज्ञान दिया। प्राचीन समय में बंदिशों को लिखित रूप में रखने का कोई साधन उपलब्ध नहीं थे। तब गुरू अपनी कला का पूर्ण ज्ञान अपने पुत्रों तथा शिष्यों को मौखिक रूप में दिया करते थे, जिससे उनकी कला जीवित रह सके तथा उनकी कला का प्रचार–प्रसार हो सके। समय के साथ विद्वान एवं कलाकार काल के गाल में समा गयें लेकिन गुरू–शिष्य–परम्परा के रूप में इस कला को जीवित रखा है। प्राचीन गुरू–शिष्य परम्परा को आज घराने के रूप में जाना जाता है। 'घराना'शब्द बीसवीं शताब्दी के देन है–लेकिन वर्ग के रूप में इसका अस्तिव सदा ही रहा है। संस्कृत का यह वाक्य सारगर्भित है– **वंशों द्विविधा जन्मना विद्यमा च।** अर्थात् वंश या कुल दो प्रकार से चलता है– एक जन्म से और दूसरा विद्या से जैसे एक परिवार में जन्में सभी व्यक्तियों का समुह एक परिवार या घराना होता है, उसी प्रकार एक गुरू स विद्या प्राप्त करने वाले सभी शिष्यो का समूह एक

परिवार या घराना होता है। सामान्यतः 'घराना' शब्द का अर्थ है–**परम्परा, कुटुम्ब,वंश–परम्परा, परिवार, वर्ग, सम्प्रदाय** अर्थात् मानव समाज की एक वर्ग स्वरूप ईकाई।

तबला वादन में छः घरानों का विशिष्ट स्थान है। इन छः घरानों को विस्तृत सन्दभ में स्थूल रूप से दो शैलियों में विभक्त किया गया हैं जिन्हें 'बाज' की संज्ञा दी गयी है। जो निम्नलिखित हैं–

- **पूरब बाज**
- **पश्चिम बाज**

तबला वादन में पश्चिम बाज में क्रमशः दिल्ली व अजराड़ा घरानों को रखा गया हैजबकि पूरब बाज में लखनऊ, फर्रुखाबाद व बनारस घराने है। पंजाब घराने का अपनाएक अलगअस्तित्व रखता है।

पूरब बाज के अन्तर्गत सम्मिलित बनारस घराना, लखनऊ घराने का ही अंग है। इस घराने की नीवंपं० राम सहाय जी ने रखी। बहुत से कलाकार अपनी मेहनत एवं निष्ठा के कारण सुप्रसिद्ध हुए। इस घराने के अन्तर्गत पं० भैरव सहाय तथा पौत्र बलदेव सहाय तथा प्रपौत्र दुर्गा सहाय, पं० शम्भूमहाराज, पं० कंठे महाराज,पं० बिक्कू महाराज इत्यादि कलाकार प्रसिद्ध हुए। अतः शोधार्थी का शोध कार्यबनारस घराने के प्रख्यात तबला वादकपं० अनोखे लाल मिश्र एवं पं० सामता प्रसाद मिश्र'गुदई महाराज'की वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना है। दोनो ही कलाकार बनारस घराने से सम्बन्धित है। एक ही घराना होने पर भी इनकी वादनशैली एवं रचनायें, बैठक में भिन्नता मिलती है। दोनो ही कलाकार ने अपने अथक प्रयास, रियाज एवं साधना से विश्व ख्याति प्राप्त की।

बनारस के प्रसिद्ध तबला वादक 'ना धिं धिं ना के जादूगर' पं0 अनोखेलाल जी का जन्म सन् 1914 में ग्राम –ताजपुर तहसील–सकलहोडा जिला–चन्दौली में हुआ था। इनके पिता पं0 बुद्धू प्रसाद मिश्र एक प्रसिद्ध सांरगी वादक थे तथा चन्दौली में ही रहा करते थे। ढाई वर्ष की बाल्यावस्था में इनके पिता का तथा 6 वर्ष की अवस्था में इनकी माता देहान्त हो गया। इनका पालन–पोषण इनकी दादी श्रीमती जानकी देवी ने किया। जानकी देवी इनको लेकर बनारस आ गई तथा इनको पं0 भैरव प्रसाद मिश्र से तबला वादन की शिक्षा दिलवाने लगी।

'पद्मभूषण' सामता प्रसाद मिश्र 'गुदई महाराज' भी पं0 अनाखे लाल मिश्र जी की वादन शैली से बहुत प्रभावित थे। इनका जन्म 18 जुलाई 1920 ई0 को वाराणसी के कबीरचौरा मोहल्ले में संगीतज्ञों

के परिवार में हुआ था। यें गुदई महाराज के नाम से तबला –जगत में विख्यात हुए। इनके पिता पं0 बाचा मिश्र बनारस के प्रसिद्ध तबला वादक थे। इन्हाने तबले की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की थी। इनके 8 वर्ष की अवस्था में ही इनके पिता का देहान्त हो गया। इन्होने आगे की शिक्षा पं0 बिक्कू महाराज से प्राप्त की इन्होन देश –विदेश में भी वादन कर यश व सम्मान प्राप्त किया। इन्होने कई फिल्मों में भो तबला वादन किया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–:उपरोक्त विषय से सम्बन्धित पूर्व में हुए शोध–कार्यो की जानकारी हेतु शोधार्थी ने सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया। जिसमें विभिन्न पुस्तकें, पत्र–पत्रिकायें, शोध–प्रबन्ध आदि का अध्ययन किया, जो इस प्रकार हैं–

पुस्तकें

- ना धिं धिं के जादूगर अनोखे लाल मिश्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

  लेखक– डॉ० प्रेम नारायण सिंह
- पद्मभूषण पं० सामता प्रसाद 'गुदई महराजव्यक्तित्व एवं कृतित्व'

  लेखिका – डॉ० रेनू जौहरी
- तबला पुराण

  लेखक – पं० विजय शंकर मिश्र
- ताल प्रबन्ध

  लेखक – पं० छोटे लाल मिश्र

शोध–प्रबन्ध

- ''तबला के बनारस–दिल्ली घराने की वादन शैली एवं विशिष्ट रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन''–

शोधकर्ता–प्रभाकर लाल श्रीवास्तवः, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, 2009

- तबला जगत में बनारस घराने की विशेषतायें एवं प्रभाव

  शोधार्थी–सावित्री श्रीवास्तव, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, 1995

- तबला वादन में दिल्ली तथा बनारस घरानों का तुलनात्मक अध्ययन

  शोधकर्ता– प्रेम चतुर्वेदी, डा0 हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय (म०प्र), 2003

- पं० गुदई महाराज का तबला वादन के क्षेत्र में योगदान

  शोधार्थी – रेखा सेठी, दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा, 2016

- तबले के बनारस घराने की रचनाओं का विश्लेषात्मक अध्ययन

  शोधकर्ता– डॉ० शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय (खैरागढ़),2008

पत्रिकायें– संगीत कला विहार

- संगीत के युगपुरूष– पं० अनोखे लाल मिश्र

  लेखक– डॉ० कुमार ऋषितोष, मार्च, 2007

- तबला जगत का एक जाज्वल्यमान सितारा –पं० अनोखे लाल मिश्र

  लेखक– डॉ० राधेश्याम जायसवाल, , मार्च, 2007

- शुद्ध बनारसी बाज के पर्याय– पं० अनोखे लाल मिश्र

  लेखक– डॉ० पार्थ चक्रवर्ती, मार्च– 2007

- सचमुच अनोखे थे –पं० अनोखे लाल मिश्र

  लेखक– पं० विजय शंकर मिश्र,मार्च– 2007

- शिष्य–वत्सल गुरूवर पण्डित अनोखे लाल मिश्र

  लेखक– पं० छोटे लाल मिश्र,मार्च– 2007

- स्व० सामता प्रसाद उर्फ गुदई महाराज के न होने का अर्थ

  लेखक– पं० विजयशंकर मिश्र, जुलाई –2007

अतः शोधार्थी ने जिस विषय का चयन किया है उस विषय के सर्वेक्षण से जो सामग्री प्राप्त होती है वह चयनित विषय से आंशिक रूप से सम्बन्धित है, उपरोक्त विषय के सम्बन्ध में पूर्णरूप से जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासावश शोधार्थी ने ''बनारस घराने के प्रख्याततबला वादक पं० अनोखे लाल मिश्र एवं प०सामता प्रसाद मिश्र 'गुदई महाराज'की वादन शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय का चयन किया। यह विषय सर्वथा नवीन विषय है।

समस्या कथन– "बनारस घराने के प्रख्याततबला वादक पं0 अनोखे लाल मिश्र एवं पं0 सामता प्रसाद मिश्र 'गुदई महाराज' की वादनशैलियों का तुलनात्मक अध्ययन।"

शोध में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या–

प्रख्यात–अति प्रसिद्ध, मशहूर, प्रसन्न, सुखी, नाटक का एक भेद जिसमें कथावस्तु का आधार ऐतिहासिक या पौराणिक कहानियाँ होती हैं।

तुलनात्मक–गुणों की समानता और असमानता दिखाने वाला।

सांगोतिक –विद्वानों के अनुसार संगीत का, संगीत की, संगीत से जुड़ा हुआ, संगीत से जुड़े हुई।

परम्परा– लोक भारती, प्रमाणिक हिन्दी कोश के अनुसार, वह विचार, प्रथा या क्रम जो बहुत दिनों से प्रायः एक ही रूप हो, किसी घटना, कार्य, पद, आदि का बहुत दिन सें चला आया क्रम।

वादन–मानक विशाल हिन्दी शब्द कोश के अनुसार, कहना, बोलना, बाजा बजाना।

शैली– भाषा शब्द कोष के अनुसार, ढ़ग, प्रणाली, प्रथा, तरीका, रीति, पद्धति।

उद्‌देश्य–प्रस्तुत शोध–कार्य के उद्‌देश्य इस प्रकार हैं–

- तबले के बनारस घरानें का अध्ययन करना।
- बनारस घरानें के वादन शैली का अध्ययन।
- पं0 अनोखे लाल मिश्र के जीवन–वृत्त का अध्ययन करना ।

- पं0 अनोखे लाल के वादन शैली की विशेषताओं का अध्ययन।
- पं0 सामता प्रसाद मिश्र के जीवन–वृत्त का अध्ययन करना।
- पं0 सामता प्रसाद मिश्र की वादन शैली की विशेषताओं काअध्ययन।
- पं0 अनोखे लाल मिश्र एवं पं० सामता प्रसाद मिश्र की वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन।
- पं0 अनोखे लाल मिश्र एवं पं० सामता प्रसाद मिश्र के वादन में प्रयुक्त रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध–कार्य का महत्व–प्रस्तुत शोध–कार्यपं0 अनोखे लाल मिश्र एवं पं० सामता प्रसाद मिश्र से सम्बन्धित है। दोनों ही कलाकार एक ही घराना एवं परम्परा से सम्बन्धित थे परन्तु इनकी वादन मेंप्रचुर भिन्नता कमलती है। दोनो ही कलाकारों ने अपने अटूट रियाज् एवं साधना द्वारा संगीत के क्षेत्र में ख्याति अर्जित की व संगीत जगत में अपनी नवीन पहचान बनाकर एक उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया। अतः शोधार्थी का शोध–कार्यबनारस घराने के प्रख्यात तबला वादकपं० अनोखे लाल मिश्र एवं पं० सामता प्रसाद मिश्र 'गुदई महाराज'की वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

परिसीमांकनः–शोध–कार्य की समय सीमा को देखते हुए प्रस्तुत शोध–कार्य बनारस घराने के प्रख्यात तबला वादक पं0 अनोखे लालमिश्र एवं पं० सामता पसाद मिश्र 'गुदई महाराज' की वादन शेलियों के तुलनात्मक अध्ययन तक ही सीमित रहेगा।

अध्ययन विधिः–प्रस्तुत शोध–कार्यशोधार्थी द्वारा निम्न विधियों से किया जायेगा–

- विश्लेषणात्मक विधि
- साक्षात्कार विधि
- निरीक्षण विधि

अध्ययन स्त्रोतः—प्रस्तुतशोध—कार्य विभिन्न उपकरण जैसे—पुस्तकालय में उपलब्ध सामग्री, इन्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री, साक्षात्कार, दृश्य—श्रव्य सामग्री इत्यादि की सहायता से किया जायेगा।

अध्ययन की रूपरेखा

शोध—कार्य को सुव्यवस्थित रूप प्रदान करने के लिए निम्न अध्यायों में समायोजित किया जायेगा—

भूमिकाः— सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

प्रथम—अध्यायः— पं0 अनोखे लाल मिश्र का जीवन—वृत्त एवं सांगीतिकयोगदान

द्वितीय अध्याय—पं0 अनोखे लाल मिश्र की वादन शैली एवं उनके वादन में प्रयुक्त रचनायें

तृतीय अध्याय—पं० सामता प्रसाद मिश्रकाजीवन—वृत्त एवं सांगीतिक योगदान

चतुर्थ अध्याय—पं० सामता प्रसाद मिश्र की वादन शैली एवं उनके वादन में प्रयुक्त रचनायें

पंचम अध्याय—पं० अनोखे लाल मिश्र एवं पं० सामता प्रसाद मिश्र की वादन शैली एवं रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- शुक्ल, डॉ० योगमाया शुक्ल– तबले का उद्‌गम विकास एवं वादन शैलियाँ

  प्रकाशक – हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- मिस्त्री, डॉ० आबान ई० – पखावज एवं तबला के घराने एवं परम्पराएँ

  प्रकाशक – पं० केकी० एस० जिजिना स्वर साधना समिति मुम्बई, 2000
- श्रीवास्तव, गिरिश चन्द्र– तालकोश

  प्रकाशक – रूबी प्रकाशक, गुरूतेग बहादुर, नगर, इलाहाबाद
- सिंह, डॉ० प्रेम नारायण – ना धिं धिं ना के जादूगर अनोखे लाल मिश्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

  प्रकाशक – कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
- जौहरी, डॉ० रेनू – पद्‌मभूषण पं० सामता प्रसाद 'गुदई महाराज' व्यक्तित्व एवं कृतित्व

  प्रकाशक – कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
- मिश्र, पं० विजय शंकर –तबला पुराण

  प्रकाशक – कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
- मिश्र, पं० छोटे लाल –ताल प्रबन्ध

  प्रकाशक – कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
- त्रिपाठी, डॉ० शिवेन्द्र प्रताप – तबला विशारद

  प्रकाशक – कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली